प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद हैं? 5.2.68

ओमशांति। बाप बैठ रुहानी बच्चों को भिन्न2 गुह्य राज समझाते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं हम अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं और आये हैं भारत की रुहानी सेवा करने। और तो कोई रुहानी सेवा करने वाला है नहीं। भारवासी जो पतित बन गए हैं उन्होंने ही बुलाया है बाप को कि आओ, भारत खास दुनिया आम को पावन बनाओ। जैसे कोई पर काम रखा जाता है ना। पतित–पावन तो एक ही बाप है। तो जरूर उन पर ही काम रखेंगे। पुरानी दुनियां तो जरूर खतम होगी। समझते हैं यह खतम होने वाला है। तो जरूर नई दुनियां स्थापन करने वाले को बुलावेंगे कि यह दुनियां बदल कर दो। तुम रुहानी बच्चे भी बाप के साथ सेवक ठहरे। वह होते हैं जिस्मानी सेवक। तुम हो रुहानी सेवक। कल्प2 संगमयुग पर तुम यह सेवा करते हो ;परंतु ड्रामा के टाइम का पता न होने कारण समझ नहीं सकते हैं। बाप जो भारत को पापात्मा से पुण्यात्मा बनाते हैं वह तो अपने टाइम पर अपनी सर्विस पर आय खड़े हो जाते हैं। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता नहीं था। अभी भी ऐसे है। बुलाया तो सभी ने है हे पतित–पावन आओ। पुरानी दुनियां को नई बनाने बुलाना पड़ता है हे रहमदिल ,हे दुःखहर्ता–सुखकर्ता.....एक को ही बुलाते हैं। आया भी एक ही है। तुमको बच्चा बनाय अपने साथ शामिल बनाया है सर्विस में। यह बेहद की बातें अच्छी रीत समझने की हैं। वास्तव में सर्वेंट हो भारत के। खुदाईखिजमतगाद(र) हो। खिजमत करने वाले सर्वेंट ही हुए। बेहद का बाप बेहद के बच्चों का सर्वेंट है। लौकिक बाप भी सर्वेंट होता है ना। तो बच्चों को श्रीमत पर चलना है। बाप के साथ मददगार बन विषस वर्ल्ड को वायसलेस बनाना है। यह भी जानते हैं कामेषु–क्रोधेषु हैं। विख के साथ आधा कल्प का प्यार है। वह बंद किया जाता है तो जरूर क्रोध आवेगा। फिर अबलाओं पर अत्याचार करते हैं। यह भी नूंध है। जो खुद ही व्यभिचारी हैं तो उनको यह अच्छा लगता है। तुम अव्यभिचारी ,श्रेष्ठाचारी बनाते हो (तो) भी विख बिगर रह नहीं सकते हैं। कैसे2 भ्रष्टाचार में चले जाते हैं। फिर भी नाम बदनाम न कर उन्हों को पर्दे अंदर ढका जाता है कि कहां एकदम खतम न हो जाये। बच्चे जानते हैं हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। हमारा धंधा ही है पतितों को पावन करना। सहन भी करना पड़े। कठिनाइयां तो जरूर आवेंगी। विघ्न पड़ेंगे। तुमसे कोई पूछे तुम्हारा उद्देश्य क्या है?बोलो, उद्देश्य यही है भारत जो पतित बन गया है तुम पुकारते रहते हो पतित–पावन बाप को कि आकर पतित भारत को पावन बनाकर जाओ। यह बाप को हुकुम मिला हुआ है। सो बाप हम बच्चों सहित यह कार्य कर रहे हैं। भारत की रुहानी सेवा कर रहे हैं। पावन बनाने की। हम आपे के सर्विस में ही हैं। हमने ही बुलाया है। बाप अकेला तो नहीं आकर पावन बनावेंगे। हम भी उनके मददगार हैं। अभी तो रावणराज्य है ना। रावण तुम्हारा बहुत पुराना दुश्मन है। रामराज्य तो सतयुग को ही कहा जाता है। यहां हो थोड़े ही सकता है ;परंतु इतनी बुद्धि भारतवासियों में तो है नहीं। नम्रता भी दिखानी चाहिए और चुनरी भी पहननी चाहिए। बुलाते हो कि पतित–पावन आओ ;परंतु अपन को पतित एक भी समझते नहीं हैं। बड़े ही मगरूरी दिखाते हैं। वास्तव में पतितों को मान थोड़े ही होना चाहिए। भारत पड़ (पर) वैश्यालय नाम क्यों पड़ा है? क्योंकि वैश्यायें हैं। सतयुग है शिवालय। शिवबाबा ही भारत को पवित्र शिवालय बनाते हैं। हम तो सर्वेंट हैं। यू ंतो विघ्न आदि कल्प पहले भी सहन किये थे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां शिवबाबा की संतान श्रीमत पर भारत को पावन बनाय रही हैं। अब पवित्र तो जरूर बनना ही है। तुम भारतवासी जो चाहते हो कल्प2 बुलाते हो कि आकर पतितों को पावन बनाओ, वो पुरानी दुनियां को चेंज करो। तो मैं आकर सबको पावन बनाय सुखी कर जाता हूं। फिर आधा कल्प मुझे कोई बुलाते ही नहीं। अब तो सभी रूहों पर कट लगी हुई है। सतोप्रधान से सतो, रजो,तमो बनते इस समय तमोप्रधान बन गए हैं। एक भी सतोप्रधान हो सके। जब सतोप्रधान दुनियां है तो एक भी तमोप्रधान हो न सके। अभी तो कलियुग। तमोप्रधान। तुम लोग क्यों नहीं अपन को तमोप्रधान समझते हो? तब तो पुकारते हो आकर

सतोप्रधान ,पावन बनाओ। पावन दुनियां सतयुग को कहा जाता है। ऐसे नहीं कोई एक पावन बना तो बस सतयुग हो गया। सतयुग माना सारी दुनियां के लिए सतयुग। तो हम सर्वेंट हैं सारी दुनियां को पावन बनाने। भारत पवित्र था तो एक ही धर्म था। चित्रों पर ले जाना चाहिए। यह सब इतने धम्र पीछे आये हैं। म्युजियम वा प्रदर्शनी में तुम्हारे पास बहुत आते रहेंगे। समझाने की श्रीमत तो बाप देते रहते हैं फिर उस पर कोई चले वा न चले। भाग्य में उंच न है तो कर ही क्या सकते? स्वर्ग का नाम तो बड़ा ही भारी है। नर्क का भी नाम बड़ा भारी है। अभी तो नर्क का पिछाड़ी का पाम्प है। क्या2 चीज़ें निकालते रहते हैं। सायंस आदि बहुत सीखते रहते हैं। आत्मा में संस्कार भरती रहती है, जो साथ ले जावेंगी। फिर वहां बनावेंगे। अभी कितनी तरक्की कर रहे हैं। आत्मा सीखेंगी तो तब तो संस्कार ले जावेंगी। तुम भी यहां से संस्कार ले जाते हो ना। तो बहुत नम्रता ,प्यार ,युक्ति से चुनरी पहनना चाहिए। हम तो भारतवासियों के हुकुम से आये हैं। तुम्हारे बापू जी ने भी पुकारा है हे पतित–पावन आओ, आकर रामराज्य स्थापन करो। मनुष्य तो रामराज्य कर न सके। पुरानी दुनियां खतम ही कहां हुई है, जो इनको रामराज्य कहा जावे। यह तो है ही झूठ खंड। जो बोलते हैं वह झूठ। पुरानी विश्व को नया बनाना, पतित को पावन बनाना यह कोई कृष्ण का काम थोड़े है। कृष्ण ने थोड़े ही राजयोग सिखाया। इन्हों (ल0ना0) को राजा किसने बनाया? जरूर भगवान ही पावन दुनियां स्थापन करते हैं। उसमें यह श्रीकृष्ण पहला प्रिंस है सतयुग का। तो बच्चे सर्विस में लग जावें इसमें ही बच्चों का कल्याण है। जो करेगा सो पावेगा। टाइम वेस्ट न करना है। तुम कहते भी हो बहुत गई थोड़ी रही.....10वर्ष से 9वर्ष , 9वर्ष से 8वर्ष बाकी रही है। दिन प्रतिदिन दुनियां भ्रष्टाचारी ही होती जाती है। अभी कलियुग का अंत आय हुआ है। सेकंड व सेकंड टिक2 करते टाइम पास होता गया। ड्रामा फिरता गया है। तो फिर जरूर रिपीट करेंगे ना। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। पार्ट भी अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी है। ऐसे2 विचार कर सर्विस करते रहेंगे तो खुद भी फील करेंगे बरोबर हमने ही पतित–पावन बाप को बुलाया है तो जरूर यह पतित दुनियां होगी। देवताएं तो नई दुनियां में रहते हैं। इस समय है सबकी विनाश काले विपरीत बुद्धि। जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, ठिक्कर–भित्तर में है। हम तो बाप से प्रीत रख बाप से वर्सा ले रहे हैं। सर्वव्यापी है, फिर वर्सा किससे लेवें? क्या ठिक्कर–भित्तर से? कुछ समझो तो सही। इतने बड़े2 पोजीशन वाले बने हो कुछ ज्ञान के राज़ को तो समझो। यह एम.पी. आदि इस पतित दुनियां में ही हैं। राजा तो हैं नहीं। तुम कितने वज़ीर बने हो। ऐसा कब सुना राजा बिगर वज़ीर हो। यहां तो ढेर के ढेर वजीर हैं। राजा–रानी हैं नहीं। इसको कहा जाता है कौड़व राज्य। प्रजा का प्रजा पर राज्य। अब इनकी भी अन्त होनी है। कौड़वों–पाण्डवों की लड़ाई तो लगी नहीं। राजाई न तो हम पांडवों के पास है, न तुम्हारे पास है। हम तो तुम सबकी ,सारी दुनियां के सर्वेंट हैं। तुमने ही बुलाया हे। तो बाप हम बच्चों को(के) साथ सारे विश्व को पवित्र बनाय रहे हैं। तुम भी पवित्र बनो तो शिवालय में चलो। बड़ा युक्ति से समझाना होता है। ऐसे नहीं चूहे लधे हैडगरी.....बड़ी समझ चाहिए। ज्ञान भी किसको समझ से देना चाहिए। म्यूजियम वा प्रदर्शनी में बहुत अच्छी .....रहनी चाहिए। कहां कोई किसकी डिससर्विस न करे। कइयों को अपना नशा भी बहुत रहता है ; परंतु बात करने का अकल बिल्कुल नहीं। देहाभिमान बड़ा ही कड़ा है। देहीअभिमानी बनने बिगर रिफाइन बन न सके। देहीअभिमानी बनना, जीते जी पूरा मौत है। अपन को आत्मा समझना मासी का घर नहीं है। समझते कुछ भी नहीं। सिर्फ कांध हिलाते रहते हैं। देहीअभिमानी बनने से फिर सभी विकार टूट जाये, खुशी का पारा चढ़ जाये। खुशी में आधा भोजन भी खा न सको। कहते हैं ना खुशी जैसी खुराक नहीं। 21जन्म राजाई की तुमको खुराक मिल रही है। तो पेट सदैव भरा रहना चाहिए। माया का प्रवेश होने से लोभ में आय डबल, ट्रबल भी खाय लेते हैं। बाप समझ सकते हैं कौन सर्विस के (लिए) रात–दिन बुद्धि लड़ाते रहते हैं। बहुतों का कल्याण करने किसको शौक है।

.....कलियुगी सम्बंध से दिल नहीं लगेगी। ब्राह्मण कुल वाले ही अच्छे लगेंगे। तुम समझते हो यह पहले2 .....है तो उनसे ही प्रीत होनी चाहिए। देहाभिमान से लून–पानी रहते हैं। वह रुहानी लव कहां? हमको तो भारत को पुरुषोत्तम बनाना है जरूर। अभी भारत भ्रष्टाचारी ,व्यभिचारी है। क्या2 होता रहता है। लड़ाई में ढेर के ढेर मनुष्य मरते हैं। भारतवासियों ने हुकुम दिया है हमको पावन दुनियां सतयुग चाहिए। तो जरूर कलियुग दुनियां खतम हो जावेगी। अभी कितनी लम्बी–चौड़ी दुनियां है। अभी बाप ने हुकुम दिया है पुरानी झाड़ को रिजुबिनेट करना है। नया सैम्पलिंग लगाना है। अभी हम देवी–देवता धर्म का कलम लगाय रहे हैं। कितने रावण के सम्प्रदाय हैं। यह सभी विनाश को पाने हैं। अभी यह संगम है। तुम्हारे के लिए और सफाई के लिए। तुम जब पढ़कर पास होंगे तब ही इस पुरानी दुनियां की सफाई होगी। पतित से पावन दुनियां बननी है ना। फिर नम्बरवार तुम जाकर जन्म लेंगे। अभी पावन बन रहे हो। दैवीगुण भी धारण करते हो। यहां ही दैवीगुण आत्मा में धारण कर तैयार होना है। आत्मा समझती है बरोबर हमको ऐसा देवता बनना है। पहले तो अपने को आत्मा समझो। बहुत कोई मुश्किल होंगे जो अपने को आत्मा समझ यथार्थ रीति याद करते होंगे। आगे यह ज्ञान थोड़े ही था। तुम जो कुछ सुनते हो वह भी ड्रामा में नूंध है। जो हुआ ड्रामा में था। संशयबुद्धि कहेंगे यह ठीक नहीं। ऐसा क्यों हुआ यह होता था। अरे, ड्रामा है ना। जो जिसने किया , जो पास हुआ ,ड्रामा। बहुतों को अनेक प्रकार के संकल्प उठते हैं। ड्रामा को ही झूठा बनाय देते हैं। जो हुआ ड्रामा में था। अगर कुछ रांग हो जाता है तो फिर अच्छा बनाना पड़ता है। गंद में कोई गिर पड़ते हैं , ड्रामा में था। फिर से पुरुषार्थ कराया जाता है। एक बार, दो बार माफ है। तीसरा बारी गिरे तो फिर कुछ भी नहीं होगा। अजामिल जैसे है ना। अभी अजन तुमने क्या सर्विस की है?सच्चा2 वैश्यालय जो है उनको शिवालय बनाओ तब नाम बाला हो। वैश्याओं को अजन तुमने उठाया नहीं है। तुम्हारे में योगबल की ताकत ही नहीं। अभी तो 5परसेंट भी देहीअभिमानी नहीं बने हैं। हम आत्मा हैं। हम आत्माएं बाबा के साथ पार्ट बजा रही हैं। वह अवस्था ही कहां है। गरीब लोग चार्ट आदि लिखते हैं। साहुकारों को फुर्सत ही कहां है? बाप अभी तुमको समझ दे रहे हैं यह पुरानी दुनियां खतम करने आया हूं। फिरसे आदि सनातन (देवी) देवता धर्म की स्थापना हो रही है। देवता बनना है तो वह चलन, दैवीगुण ,वातावरण सब दैवी चाहिए। चलन ही नहीं सुधरती है, दैवी गुण धारण न हुई तो वह क्या पद पावेंगे। कहेंगे इनका भी ड्रामा में पार्ट है। राजाई में तो हर प्रकार के चाहिए ना। यज्ञ वत्स और शिवबाबा का रुद्र ज्ञान यज्ञ का वत्स अथवा भगवान का वत्स कहलाने वाले की चलन कैसी होनी चाहिए? बच्चों को समझना चाहिए हम बाबा के साथ आये हैं। पतितों ने बुलाया है कि इस पतित दुनियां की सफाई करके दो। कलियुगी कचड़े को निकाल सतयुग की स्थापना करने बुलाया है। बच्चों को साथी बनना है। बड़ी ही रॉयल्टी चाहिए। शिवबाबा अंदर जानते हैं ना हम क्या करने आये हैं। नई दुनियां की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब रहेंगे नहीं। विनाश के लिए बड़ी युक्ति रची हुई है। दिनप्रतिदिन एक/दो के दुश्मन बनते जाते हैं। किसको समझाने की भी बड़ी युक्तियां चाहिए। बाप तो पढ़ाय, समझाय रहे हैं। आखिर वह समय भी आ जावेगा। जितना2 जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा वह उंच घर में जन्म लेंगे। जहां से फिर राजाई में आ जावेंगे। तुम जानते हो हम स्वर्ग के झाड़ देख रहे हैं। हमको पढ़ाने वाला कौन है , यह भी बहुतों को समझ में नहीं आता है। बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूं। इसलिए कोई विरला ही पहचानते हैं। मैं जो हूं, जैसा हूं ,साथ में रहने वाले भी समझते नहीं हैं। न समझ सकते हैं। सिर्फ कहेंगे शिवबाबा इस तन में हैं, बस। उनका आक्युपेशन नहीं जानते।

अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप–दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

✶✶✶✶✶✶✶✶ शिवबाबा याद है?✶✶✶✶✶✶✶✶